भगवत् कृपा
THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 5	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
सोमवार 26/5/97	मई–1997	प्रति अंक : 5.00

निमंत्रण

आईये.....

हम सभी को प्रकृति व प्रारब्ध के जड़ बंधनों से मुक्त कराने वाली सहजानंदी चेतना ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का 79वां प्राकट्य दिन

दिल्ली–अनिर्देश के प्रांगण में दिनाँक 15 जून' 97, रविवार सायं 7.00 से 9.00 मना कर सेवा, स्मृति, समागम से सपरिवार-मित्रमंडल सहित स्वयं को कृतार्थ करें......

''शब्दों में ना बयान हो इतना दिया तुमने रखूँ अखंड याद कितना कुछ किया तुमने.......''

12 जून.......यानि-हम सभी के पिता, सखा, पथप्रदर्शक, गुरु, प्रभु, प्राणाधार, अक्षरधाम की दिव्य विभूति, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन ! संबंध मात्र से प्रकृति व प्रारब्ध के जड़ बंधनों से मुक्त कराके जीतेजी अक्षरधाम का सुख अनुभव कराने मानव देह धारण करके एकदम नई योजना लेकर आई सहजानंदी चेतना....जो स्थूल शरीर में होने तक तो सब को देती ही रही......गुरुहरि योगीजी महाराज से पाए सुख के खजाने को लुटाती ही रही और..... शरीर छोड़ने के बाद भी अपने संबंध वाले चैतन्यों का विकास अत्यधिक तीव्र गति से कराने दिव्यरूप से निरन्तर तत्पर ही है।

श्री हरिन्द्र दवे ने एक बहुत ही अच्छी बात लिखी है कि–

अश्वत्थामा ने शिवजी की उपासना की,
अर्जुन ने शिवजी की उपासना की
एवं
श्री कृष्ण भगवान ने भी शिवजी की उपासना की
और उपासना के फलस्वरुप
अश्वात्थामा ने-धृष्टद्युम्न तथा द्रौपदी के पुत्रों का वध कर पाये ऐसा खड़ग प्राप्त किया,
अर्जुन ने अमोघ दिव्य शस्त्र प्राप्त किए
और
श्रीकृष्ण ने जो तप किया उसका व्यासजी ने वर्णन किया है कि–

''नारायण ने मैनाक पर्वत पर विराट तपस्या की और इस तप से त्रिलोक को प्रकाश से भर दिया !''

हम विचारें कि–प.पू. काकाजी ने भी जो किया वह ऐसा ही कुछ किया ना? ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज के अभिप्राय की भक्ति से उनके अन्तर की प्रसन्नता के फलस्वरूप मिले सुख व आनंद का जो कलश उनके हृदय में छलका, वह उन्होंने हम सब पर उड़ेल ही दिया ना ! खुद ने प्रभु को पाया और उस प्रभु से हम सब को भर दिया..... वच.अंत्य. 21 की समझदारी से जीवन जीता एक ब्रह्मनियंत्रित दिव्य समाज खड़ा कर दिया ! और यहाँ..... समझ में आता है कि **सच्चा तप केवल निजी तेज बढ़ाने नहीं, बल्कि सब का तेज बढ़ाने के लिए होता है !**

प.पू. काकाजी ने हमें क्या दिया और क्या नहीं दिया– इसका खूब सुन्दर विश्लेषण मुंबई के **प.भ. हेमंत मर्चंट** ने इस 7 मार्च को किया है-जो अपने आप में अत्यधिक गहराई लिए हुए है।

तो आईये, हम सभी इसका मनन-चिंतन करें और जीवन की पल-पल हमारे लिए किया गया प.पू. काकाजी का अनहद् परिश्रम याद करके, उनकी पसंद का जीवन जीने अग्रसर हों....

गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज को.....

हे काकाजी ! जब-जब आपकी दिव्य स्मृति में खो जाते हैं, तब मानसपट पर आपकी अनोखी मूर्ति उभर आती है।

आप धरती पर पधारे, प्रभु को अखंड धारण किया, संबंध में आये सभी को बांटा, अनेकों के दुःख दूर किये, सभी को सुख, शान्ति, आनन्द दिया ! स्वरूपनिष्ठा का नूर प्रगटाया, आत्मीयता का धोध बहाया। जब मन पूछता है कि आपने क्या-क्या दिया? तब भीतर में आवाज़ आती है कि आपने क्या नहीं दिया।

- आपने आपका ऐसा दिव्य संबंध दिया कि दूसरे सभी ऋणों के बंधन सहज ही गौण हो जायें....
- महाराज की ऐसी सर्वोपरिता समझाई कि अन्य किसी से भय रहे नहीं.....
- **'स्वामिनारायण'** मंत्र का ऐसा फेर चढ़ा दिया कि भूमंडल में घूमते दूसरे अनंत नादों के भंवर में हम कोई कहीं फँसे नहीं....
- साक्षात् अक्षरधाम तुल्य **'आत्मीयता की गंगोत्री'** समान ताड़देव का ऐसा अनोखा स्थान दिया कि जहाँ से और कहीं प्रस्थान करना रहे ही नहीं.....
- सोखड़ा, सांकरदा, विद्यानगर, समढ़ियाला, दिल्ली, शिकागो आदि तीर्थ स्थानों में स्थावर व जंगम मन्दिर तैयार किये.....
- **'सभी योगों का राजा'**-ऐसा स्वरूपयोग दिया जिससे दूसरे सभी योग सहज सिद्ध हो जायें.....
- प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. प्रमुखस्वामिजी, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. बा, प.पू. बेन जैसे गुणातीत स्वरूपों की पहचान कराई, जिनके दर्शन से सदा सनाथ होने का एहसास हो और समागम से सदैव जागृत रहें.....
- जिनकी प्रसन्नता से आप स्वयं प्रसन्न हों, ऐसे पू. कांतिकाका, पू. गोरधनकाका और अन्य बड़ों व साथीदारों से मैत्री का रहस्य समझाया.....
- ऐसे आत्मीय भक्तों का समाज दिया कि जीवन में लौकिक रिश्तों का कोई विशेष महत्व नहीं रहे.....
- ऐसे मित्र दिए कि जिनकी सन्निधि से भीतर को आनंद और हृदय को हाश मिले.....
- यूं प्रभु, महाप्रभु और महातम प्रभु.....भगवान, संत और भगवदी की यथार्थ पहचान कराई और उनका माहात्म्य समझाया.....
- विचार, वाणी, वर्तन एवं भजन से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज को ऐसा जीवंत रखा कि भविष्य में कभी भी आपको भूलने का अपराध हम कर ही ना सकें.....
- पप्पाजी और स्वामिजी के साथ के आपके अद्वैत संबंध को घोट-घोट कर समग्र गुणातीत समाज में भावात्मक एकता का रहस्य दृढ़ कराया.....
- हर एक क्रिया की शुरुआत में ही नवकार मंत्र की ऐसी चाबी बताई कि प्रारंभ में ही पूर्णाहुति की फलश्रुति दिखाई पड़े....
- नाभि के भजन की ऐसी करामात बताई कि मुसीबत के समय की चेन पुलींग कभी भी करनी ना पड़े.....
- धून्य स्वयं ने बहुत करी और सबसे इतनी करवाई कि **'स्वामिनारायण'** केवल नाम या मंत्र ही नहीं, बल्कि हमारे रोम-रोम का अंतरनाद बन गया.....
- साप्ताहिक सत्संग सभा की ऐसी लगन लगवाई कि बापा का वचन पले और हमारा जीवन धन्य बने.....

- प्रायश्चितरूप प्रार्थना की ऐसी करामात बताई कि पश्चाताप का कभी भी मौका नहीं आये.....
- महापूजा ऐसी दी कि सबकी बीमारी और विपरीत देशकाल दूर हो जायें.....
- आंतरपूजा ऐसा सिखाई कि बीमारी व देशकाल में सहज समता रहे.....
- निष्ठा का ऐसा बल दिया कि कैसे भी विपरीत संजोगों में कभी भी आनंद-मस्ती जाये नहीं....
- स्वरूपनिष्ठा की ऐसी कल चढ़ाई कि भगवान और संत ही जीवन के केन्द्र में रहें....
- केवल प्रभु के ही संबंध को महत्व देकर दूसरे सभी मूल्यांकनों को गौण गिनवाया.....
- गुणातीत ज्ञान वाणी से ऐसा दोहराया कि जड़ को चेतन करे, पत्रों से ऐसा बहाया कि सूने हृदय में प्रकाश कर दे, पुस्तकों द्वारा ऐसा प्रसराया कि सदा शाश्वत् व सनातन रहे...और उसके लिए भी आधार तो वचनामृत व स्वामी की बातों का लिया.....
- तन से भक्तों की सेवा दी जिससे बुरे प्रारब्ध अच्छे हों, मन से निर्दोषबुद्धि की सेवा का रहस्य समझाया जिससे प्रभु सहज प्रसन्न हो जायें.....
- साधुता की पदवी का बड़प्पन ऐसा समझाया कि उसके आगे त्रिलोकी का वैभव भी तुच्छ लगे.....
- **लक्ष्मी**–इतनी कम नहीं दी कि किसी के मोहताज रहना पड़े, दूसरी ओर इतनी अधिक भी नहीं दी कि जीव को ब्रह्मरूप होना है और जीवन का यही अंतिम ध्येय है–वह भूल जायें.....
- **इज्जत**–इतनी कम नहीं दी कि हम किसके हैं यह किसी को पूछना पड़े, दूसरी ओर इतनी अधिक भी नहीं दी कि जिसके कारण हम कुछ पा पाये हैं, वह भी हम भूल जायें.....
- **साधन**–इतने कम नहीं दिए कि सेवा करने में कुछ कसर रहे, दूसरी ओर इतने अधिक भी नहीं दिए कि उनकी इतनी आदत पड़ जाये कि उसके बिना सेवा ही ना हो पाये.....
- **स्वतंत्रता**–इतनी कम नहीं दी कि आत्मविश्वास ना प्रगटे और जड़ता को पा जायें, दूसरी ओर इतनी अधिक भी नहीं दी कि स्वच्छंद होकर निशान चूक जायें...
- **जगह**–इतनी कम नहीं दी कि किसी को समा ना पायें, दूसरी ओर इतनी अधिक भी नहीं दी कि कौन कहां है वह ढूँढ़ना पड़े.....
- **सेवक**–इतने कम नहीं दिए कि कोई कार्य ना हो पाये, दूसरी ओर इतने अधिक भी नहीं दिए कि उनके बिना अपाहिज हो जायें-कुछ कर ही ना पायें....
- **डॉक्टर**–इतने कम नहीं दिए कि जरूरत होने पर भागदौड़ करनी पड़े; दूसरी ओर इतने अधिक भी नहीं दिये की मंदिर छोड़ कर अस्पताल में ही रहने लग पड़े.....
- **धर्मनियम**–इतने ढीले नहीं रखे कि नैतिक और सांप्रदायिक मर्यादाएँ चूक जाएं, इतने कड़े भी नहीं रखे कि सत्पुरुष गौण हो जाए और भक्तों में रसबस ना हो पाएं.....
- **ऐश्वर्य**–इतना कम इस्तेमाल नहीं किया कि भगवान से भरोसा उठ जाए, इतना ज्यादा भी इस्तेमाल नहीं किया कि हम प्रार्थना का आधार नहीं लें.....

आपने

- प्रेम हमारी आत्मा से किया....
- रोष हमारी जड़ प्रकृति पर किया.....
- प्रोत्साहन देकर सुरुचि बढ़ाई.....
- आश्वासन देकर कसरों को क्षम्य गिनी.....
- यह सब ही आशिषरूप में दिया और बख्शिशरूप से लुटाया....हृदय के प्यार और अंतर की उमंग से दिया....खुल्ले हाथ से और भर-भर के दिया.....भक्तों के प्रति की प्रीति और प्रभु के प्रति की पराभक्तिरूप से दिया.....आपने जो दिया उसका सदुपयोग किया या नहीं किया.....संभाला या नहीं संभाला.....इधर-उधर बिगाड़ा या बढ़ाया.....संभाला या खोया.....यह कुछ भी गिने बिना देते ही रहे.....देते ही रहे और बदले में हमारी खुशी के सिवा कुछ भी नहीं माँगा.....सभी को ऐन मौके पर और जितना चाहिए दिया और स्वयं तो अकिंचन ही रहे.....
- प्रगट थे तब सेरेछाया बनकर रहे और अंतर्धान होने के बाद भी अमर गुणातीत भावना की अखंड प्रगटपन की प्रतीतिरूप से परछाई बनकर रहे.....हाजिरी से एक चिरंजीव आशा और आश्रय बन कर रहे और अनुपस्थिति से एक प्रज्जवलित अभीप्सारूप से बहे.....
- जहां से आए थे वहीं लौटे और फिर भी सभी में समाये....व्यक्तिरूप से.....अभिव्यक्तिरूप से.....गुरुभक्तिरूप से.....पराभक्तिरूप से.....आशीर्वादरूप से और अभीप्सारूप से.....और आपकी प्रसन्नता की ही आरजु हमेशा जागृत रहे ऐसी हमारे अंतर की प्रार्थनारूप में.....

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

(काका तेरी कुर्बानी, शब्दों में ना समाए.....)

[प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में बनाया गया हृदयस्पर्शी भजन-जिसे सुनकर सभी की आँखें नम हो गई थीं....]

काका तेरी कुर्बानी, शब्दों में ना समाए
इतिहास गुणातीत समाज का, तुम बिन लिखा ना जाए
काका तेरी कुर्बानी.....
आ....आ.....आ.....

जंग खेल कर बापा ने एक योजना नई गढ़ी थी,
जिसमें निज सर्वस्व की आहुति काका तुमने दी,
अपनों से तुम्हें मिली उपेक्षा, फिर भी तुम मुस्काए।
काका तेरी कुर्बानी.....
आ....आ...आ...

देश-विदेश में आज जो सत्संग दिखता हरा-भरा है,
शून्य में से इसका सर्जन काका तुमने ही करा है,
वृक्ष बड़ा फलदार भले ही, जड़ में आप समाए।
काका तेरी कुर्बानी.....
आ....आ.....आ...

शास्त्रीजी का संकल्प झेला, जानी योगी की मर्जी,
उत्तर के मुक्तों का उद्धार करने, दिल्ली भेजे गुरुजी,
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को यमुना तट पधराए।
काका तेरी कुर्बानी.....

दोहाः स्वामिनारायण धर्म को जो, उत्तर भारत में लाए।
ऐसे गुरुजी की भेंट दी, ऋण कैसे तेरा चुकाएं।।

गुरुजी-गुरुजी आप जैसा कोई नहीं-2
आप जो हमको मिले भाग्यशाली हमसा नहीं-2
गुरुजी-गुरुजी आप जैसा कोई नहीं-3

साक्षात् गुणातीत साधु हो
अखंड प्रभु के धारक हो
काकाजी का परिचय बन के-2
मूर्ति ही लुटाने आए हो.....

एक साल नहीं दस साल तलक, दिल्ली में विकास ना हो पाया,-2
अखूट धीरज रख कर तुमने, **समाज नया यहां रचाया-2**
जीव में से तुम शिव करने को, गरजू हरदम ही बनते हो,
काकाजी का परिचय बन के-2
मूर्ति ही लुटाने आए हो.....

चाहे जैसा कोई तेरे साथ बरते, साधुता नहीं छोड़ी तूने,-2
समझते हुए बुद्धू भी बने, काकाजी की रीत ना छोड़ी तूने,
हाँ उनकी रीत ना छोड़ी तूने,
सुहृदभाव और सर्वदेशीयता, वर्तन से ही पैगाम देते हो,
काकाजी का परिचय बन के....

समग्रभाव और संयुक्तरुप से जीता दिव्य समाज हो,
वैभव के पीछे अन्धे होकर, शामिल होड़ में ना हों,
योगी बापा का निशान हो, हम कहीं चूक ना जाएं।
काका तेरी कुर्बानी.....

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.6.97 रविवार – एकादशी, व्रत, प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन, गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(2) दि. 2.6.97 सोमवार – गुरुहरि योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन
(3) दि. 12.6.97 गुरुवार – **ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** जो कि 15 जून' 97 **रविवार सायं-7.00 से 9.00 अनिर्देश-दिल्ली में मनाया जाएगा।**
(4) दि. 15.6.97 रविवार – भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(5) दि. 16.6.97 सोमवार – भीम एकादशी, व्रत
(6) दि. 18.6.97 बुधवार – 'अनिर्देश' में-एक महीने के जपयज्ञ की पूर्णाहुति-सुबह 6.30 से 8.30

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Bharat Pakaging and Allied Industries, C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-III, New Delhi-110 064